Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-3 | Issue-10 | October-2025 | Page 37-42

ग्रामीण प्रजननता को प्रभावित करने वाले आर्थिक कारक : एक भौगोलिक अध्ययन (बिलासपुर जिला के विशेष संदर्भ में)

[1]निहारिका केशरवानी, [2]डॉ. रत्नेश कुमार खन्ना
[1]शोधार्थी (भूगोल), [2]सहायक प्राध्यापक
[1,2]सामाजिक विज्ञान विभाग, डॉ. सी. व्ही रमन विश्वविद्यालय बिलासपुर छत्तीसगढ़

सारांश

प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य बिलासपुर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में प्रजननता को प्रभावित करने वाले प्रमुख आर्थिक कारकों का विश्लेषण करना है। अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि ग्रामीण प्रजननता केवल जैविक प्रक्रिया नहीं, बल्कि कृषि आधारित अर्थव्यवस्था, आय की अनिश्चितता, रोजगार संरचना, भूमि स्वामित्व, महिला श्रम भागीदारी तथा स्वास्थ्य सेवाओं की आर्थिक पहुँच जैसे कारकों से गहराई से जुड़ी हुई है। प्राथमिक एवं द्वितीयक आँकड़ों के आधार पर तहसीलवार विश्लेषण करते हुए यह अध्ययन दर्शाता है कि जहाँ आर्थिक असुरक्षा अधिक है वहाँ कुल प्रजनन दर अपेक्षाकृत अधिक पाई जाती है। शोध के निष्कर्ष ग्रामीण विकास नीति, महिला सशक्तिकरण एवं परिवार नियोजन कार्यक्रमों के लिए महत्वपूर्ण संकेत प्रदान करते हैं।

मुख्य शब्द : ग्रामीण प्रजननता, आर्थिक कारक, कृषि अर्थव्यवस्था, महिला श्रम, बिलासपुर जिला

- **प्रस्तावना**

भारत के ग्रामीण समाज में प्रजनन व्यवहार सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक संरचना से गहराई से जुड़ा हुआ है। ग्रामीण क्षेत्रों में संतान संख्या का निर्णय केवल व्यक्तिगत इच्छा का परिणाम नहीं होता, बल्कि वह आजीविका, आय, भविष्य की सुरक्षा, श्रम की आवश्यकता तथा सामाजिक मान्यताओं से प्रभावित होता है। छत्तीसगढ़ राज्य का बिलासपुर जिला इस दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण अध्ययन क्षेत्र है, क्योंकि यहाँ कृषि आधारित ग्रामीण अर्थव्यवस्था, सीमांत कृषक, कृषि मजदूर तथा असंगठित क्षेत्र की जनसंख्या का प्रभुत्व है।

ग्रामीण परिवारों में संतान को केवल आश्रित नहीं बल्कि *आर्थिक संसाधन* के रूप में देखा जाता है। विशेषकर पुत्रों को कृषि कार्य, पारिवारिक भूमि संरक्षण तथा वृद्धावस्था में सहारा प्रदान करने वाला माना

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-3 | Issue-10 | October-2025 | Page 37-42

जाता है। इस पृष्ठभूमि में यह अध्ययन ग्रामीण प्रजननता के आर्थिक निर्धारकों को भौगोलिक दृष्टिकोण से समझने का प्रयास करता है।

- **अध्ययन क्षेत्र का संक्षिप्त परिचय**

बिलासपुर जिला छत्तीसगढ़ राज्य के मध्य भाग में स्थित है। जिले की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि है। जिले की बिल्हा, मस्तूरी, तखतपुर एवं कोटा तहसीलों में ग्रामीण जनसंख्या का अनुपात अत्यधिक है, जबकि बिलासपुर तहसील का ग्रामीण भाग अपेक्षाकृत अधिक शहरी प्रभाव वाला है। यही भौगोलिक एवं आर्थिक विविधता इस जिले को प्रजनन अध्ययन के लिए उपयुक्त बनाती है।

- **अध्ययन के उद्देश्य**

1. ग्रामीण प्रजननता को प्रभावित करने वाले प्रमुख आर्थिक कारकों की पहचान करना।
2. तहसीलवार आर्थिक असमानताओं का प्रजनन दर पर प्रभाव विश्लेषित करना।
3. महिला श्रम भागीदारी एवं आर्थिक स्वतंत्रता का प्रजनन व्यवहार से संबंध स्थापित करना।
4. आर्थिक कारकों के सामाजिक एवं स्वास्थ्य प्रभावों का मूल्यांकन करना।

- **शोध पद्धति**

यह अध्ययन **वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक** प्रकृति का है।

- **प्राथमिक आँकड़े** : चयनित ग्रामीण क्षेत्रों में सर्वेक्षण एवं साक्षात्कार
- **द्वितीयक आँकड़े** : जनगणना, जिला सांख्यिकी पुस्तिका, स्वास्थ्य रिपोर्ट
- **विश्लेषण विधियाँ** : प्रतिशत, तुलनात्मक विश्लेषण
-
- **ग्रामीण प्रजननता और आर्थिक संरचना का सैद्धांतिक आधार**

ग्रामीण समाज में उच्च प्रजननता का प्रमुख आर्थिक आधार कृषि आधारित आजीविका है। कृषि श्रम प्रधान गतिविधि होने के कारण अधिक श्रमिकों की आवश्यकता होती है। इसी कारण संतान को *भविष्य की श्रम-पूंजी* माना जाता है। आय की अनिश्चितता, सामाजिक सुरक्षा की कमी तथा रोजगार की अस्थिरता इस प्रवृत्ति को और सुदृढ़ करती है।

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-3 | Issue-10 | October-2025 | Page 37-42

ग्रामीण प्रजननता को प्रभावित करने वाले प्रमुख आर्थिक कारक

कृषि आधारित अर्थव्यवस्था

बिलासपुर जिले के ग्रामीण भागों में कृषि मुख्य आजीविका है। सीमांत भूमि जोत, वर्षा पर निर्भर खेती एवं पारंपरिक तकनीकें अधिक श्रम की मांग करती हैं। परिणामस्वरूप अधिक संतान को आर्थिक लाभ के रूप में देखा जाता है।

गरीबी एवं आय की अनिश्चितता

ग्रामीण परिवारों की आय स्थिर नहीं होती। असंगठित क्षेत्र की मजदूरी, मौसमी रोजगार एवं मनरेगा जैसे कार्यक्रमों पर निर्भरता भविष्य की आर्थिक असुरक्षा को बढ़ाती है। इस स्थिति में संतान को *आर्थिक सुरक्षा बीमा* के रूप में देखा जाता है।

भूमि स्वामित्व और परिवार आकार

छोटी भूमि जोतों के बावजूद अधिक परिवार सदस्य होने से प्रति व्यक्ति आय घटती है। भूमि का विभाजन आर्थिक दबाव बढ़ाता है, जिससे गरीबी का चक्र गहराता है और प्रजननता पुनः बढ़ जाती है।

महिला श्रम भागीदारी और आर्थिक निर्भरता

ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की मजदूरी कम एवं रोजगार असुरक्षित होता है। आर्थिक निर्भरता के कारण महिलाएँ प्रजनन संबंधी निर्णयों में सक्रिय भूमिका नहीं निभा पातीं, जिससे संतान संख्या बढ़ती है।

स्वास्थ्य सेवाओं की आर्थिक पहुँच

स्वास्थ्य केंद्रों की दूरी, परिवहन व्यय तथा अप्रत्यक्ष खर्चों के कारण गरीब परिवार परिवार-नियोजन सेवाओं का सीमित उपयोग करते हैं। परिणामस्वरूप अनियोजित गर्भधारण अधिक होता है।

- **तहसीलवार आर्थिक कारकों का विश्लेषण**

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-3 | Issue-10 | October-2025 | Page 37-42

तालिका : ग्रामीण प्रजननता को प्रभावित करने वाले तहसीलवार आर्थिक कारक

तहसील	गरीबी दर (%)	कृषि पर निर्भरता (%)	औसत भूमि जोत (एकड़)	औसत मासिक आय (₹)	महिला श्रम भागीदारी (%)	परिवार नियोजन की आर्थिक पहुँच (%)	आर्थिक असुरक्षा सूचकांक
बिल्हा	32	71	1.1	11,500	28	54	7.8
मस्तूरी	38	76	0.9	10,200	25	48	8.5
तखतपुर	27	63	1.4	12,800	34	62	6.4
कोटा	24	58	1.6	14,200	37	68	5.9
बिलासपुर (ग्रामीण)	18	49	1.9	16,500	42	73	4.8

स्रोत : शोधार्थी द्वारा गणना

8. परिणाम एवं विवेचना

तालिका से स्पष्ट है कि मस्तूरी एवं बिल्हा तहसीलों में गरीबी दर, कृषि निर्भरता तथा आर्थिक असुरक्षा अधिक है, जिसके परिणामस्वरूप यहाँ कुल प्रजनन दर अधिक पाई जाती है। इसके विपरीत बिलासपुर (ग्रामीण) एवं कोटा में आय, रोजगार विविधता एवं स्वास्थ्य सेवाओं की बेहतर पहुँच के कारण प्रजननता नियंत्रित है। प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत तैयार की गई तालिका एवं उससे प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि बिलासपुर जिला की विभिन्न तहसीलों में ग्रामीण प्रजननता का स्तर समान नहीं है, बल्कि यह वहाँ की आर्थिक संरचना, गरीबी की तीव्रता, आजीविका के साधन, कृषि पर निर्भरता तथा सामाजिक–आर्थिक सुरक्षा की स्थिति पर प्रत्यक्ष रूप से निर्भर करता है। अध्ययन के परिणाम दर्शाते हैं कि मस्तूरी एवं बिल्हा तहसीलों में जहाँ आर्थिक असुरक्षा अधिक है, वहीं कुल प्रजनन दर अपेक्षाकृत ऊँची पाई गई है; जबकि कोटा तथा बिलासपुर (ग्रामीण) क्षेत्रों में बेहतर आर्थिक परिस्थितियों के कारण प्रजननता नियंत्रित अवस्था में है।

सबसे पहले मस्तूरी तहसील की स्थिति पर विचार किया जाए तो यह तहसील जिले की सर्वाधिक ग्रामीण एवं कृषि-आधारित अर्थव्यवस्था वाली इकाई है। यहाँ गरीबी दर अधिक, औसत भूमि जोत छोटी तथा

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-3 | Issue-10 | October-2025 | Page 37-42

कृषि मजदूरी पर निर्भर जनसंख्या का अनुपात अत्यधिक है। आय के स्थायी स्रोतों का अभाव, मौसमी रोजगार तथा असंगठित क्षेत्र पर निर्भरता के कारण परिवारों में आर्थिक असुरक्षा की भावना गहरी है। ऐसी परिस्थितियों में ग्रामीण परिवार अधिक संतान को *भविष्य की आर्थिक सुरक्षा* तथा *श्रम-शक्ति* के रूप में देखते हैं। परिणामस्वरूप मस्तूरी तहसील में कुल प्रजनन दर जिले में सर्वाधिक पाई जाती है। इसके अतिरिक्त महिला श्रम भागीदारी अपेक्षाकृत कम तथा परिवार नियोजन सेवाओं की आर्थिक पहुँच सीमित होने के कारण अनियोजित गर्भधारण की संभावना बढ़ जाती है, जो उच्च प्रजननता को और प्रोत्साहित करती है।

इसी प्रकार बिल्हा तहसील में भी कृषि पर अत्यधिक निर्भरता, सीमांत कृषकों की संख्या तथा गरीबी की स्थिति प्रजनन व्यवहार को प्रभावित करती है। यद्यपि बिल्हा की आर्थिक स्थिति मस्तूरी की तुलना में कुछ बेहतर प्रतीत होती है, फिर भी यहाँ कृषि आधारित आजीविका का प्रभुत्व होने के कारण अधिक श्रम की आवश्यकता बनी रहती है। ग्रामीण परिवार यह मानते हैं कि अधिक संतान, विशेषकर पुत्र, कृषि कार्यों में सहायक होंगे तथा वृद्धावस्था में माता-पिता का सहारा बनेंगे। इसके साथ ही सामाजिक सुरक्षा योजनाओं की सीमित पहुँच के कारण संतान को *आर्थिक निवेश* के रूप में देखा जाता है। इन सभी कारकों का संयुक्त प्रभाव बिल्हा तहसील में अपेक्षाकृत उच्च कुल प्रजनन दर के रूप में परिलक्षित होता है।

इसके विपरीत कोटा तहसील की स्थिति अपेक्षाकृत भिन्न दिखाई देती है। यहाँ ग्रामीण जनसंख्या का अनुपात तो अधिक है, किंतु कृषि के साथ-साथ गैर-कृषि गतिविधियाँ, स्थानीय बाजार, परिवहन सेवाएँ तथा छोटे व्यापारिक अवसर भी उपलब्ध हैं। रोजगार के विविध स्रोत होने से आय की स्थिरता बढ़ती है और परिवार भविष्य को लेकर अधिक आश्वस्त रहते हैं। ऐसी आर्थिक परिस्थितियों में संतान को श्रम-पूंजी के रूप में देखने की प्रवृत्ति कम हो जाती है। परिणामस्वरूप कोटा तहसील में कुल प्रजनन दर मस्तूरी एवं बिल्हा की तुलना में कम पाई जाती है। साथ ही यहाँ महिला श्रम भागीदारी अधिक होने तथा स्वास्थ्य एवं परिवार नियोजन सेवाओं की बेहतर पहुँच के कारण दंपत्ति प्रजनन संबंधी निर्णय अधिक विवेकपूर्ण ढंग से लेते हैं।

बिलासपुर (ग्रामीण) क्षेत्र में तो यह प्रवृत्ति और अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। यद्यपि इसे ग्रामीण क्षेत्र के रूप में वर्गीकृत किया गया है, फिर भी यहाँ शहरी प्रभाव, औद्योगिक एवं सेवा क्षेत्र से जुड़े रोजगार, बेहतर परिवहन सुविधा तथा शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवाओं की अपेक्षाकृत अच्छी उपलब्धता है। इन क्षेत्रों में

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-3 | Issue-10 | October-2025 | Page 37-42

परिवारों की औसत आय अधिक, महिला साक्षरता एवं कार्य-भागीदारी बेहतर तथा सामाजिक जागरूकता का स्तर ऊँचा है। परिणामस्वरूप परिवार छोटे आकार को प्राथमिकता देते हैं और परिवार नियोजन साधनों का उपयोग अधिक किया जाता है। इस कारण बिलासपुर (ग्रामीण) क्षेत्र में कुल प्रजनन दर जिले में सबसे कम पाई जाती है।

इन निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण प्रजननता पर आर्थिक कारकों का प्रभाव निर्णायक भूमिका निभाता है। जहाँ गरीबी, आय की अनिश्चितता, कृषि पर अत्यधिक निर्भरता और सामाजिक सुरक्षा का अभाव है, वहाँ प्रजनन दर स्वाभाविक रूप से अधिक पाई जाती है। इसके विपरीत जहाँ रोजगार के विविध अवसर, आय की स्थिरता, महिला आर्थिक सशक्तिकरण तथा स्वास्थ्य सेवाओं की सुलभता उपलब्ध है, वहाँ प्रजननता नियंत्रित रहती है।

समग्र रूप से यह विवेचना दर्शाती है कि प्रजनन व्यवहार केवल व्यक्तिगत या जैविक निर्णय नहीं है, बल्कि वह ग्रामीण अर्थव्यवस्था की संरचना, आर्थिक असमानताओं तथा विकास स्तर का प्रत्यक्ष प्रतिबिंब है। अतः यदि ग्रामीण क्षेत्रों में प्रजननता को संतुलित करना है, तो केवल परिवार नियोजन कार्यक्रम पर्याप्त नहीं होंगे, बल्कि गरीबी उन्मूलन, रोजगार सृजन, महिला आर्थिक सशक्तिकरण एवं सामाजिक सुरक्षा जैसे व्यापक आर्थिक उपायों को समानांतर रूप से लागू करना आवश्यक होगा।

- **निष्कर्ष**

अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि बिलासपुर जिले की ग्रामीण प्रजननता पर आर्थिक कारकों का प्रभाव अत्यंत गहरा और बहुआयामी है। कृषि आधारित अर्थव्यवस्था, गरीबी, आय की अनिश्चितता, महिला आर्थिक निर्भरता एवं स्वास्थ्य सेवाओं की सीमित पहुँच उच्च प्रजननता को बढ़ावा देती है। जहाँ आर्थिक स्थिरता, शिक्षा एवं रोजगार विविधता उपलब्ध है, वहाँ प्रजनन दर नियंत्रित पाई जाती है।

संदर्भ

1. जनगणना भारत, 2011
2. जिला सांख्यिकी पुस्तिका, बिलासपुर
3. राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS-5)
4. ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार